पाठ - बड़े भाई साहब

— प्रेमचंद

प्रत्येक - 1, 2 अंक

① लेखक बड़े भाई साहब की किस पहेली को सुलझा नहीं पाया था?

उ० - भाई साहब कापियों में ऐसी शब्द रचना करते जिनका कोई अर्थ न निकलता था। यही लेखक के लिए भाई साहब की पहेली थी। लेखक ने एक चोटेकी तस्वीर के साथ - इबारत लिखी देखी - स्पेशल, अमीना, भाइयों - भाइयों, दरअसल, भाई - भाई, राधेश्याम, एक घंटे तक आदि, जिन्हें समझने में लेखक असमर्थ रहा।

② छोटे व बड़े भाई में पढ़ाई के स्तर में कितने दर्जे का का अंतर था?

उ० - छोटे व बड़े भाई में पढ़ाई के स्तर पर चार जमात का अंतर था। भाई साहब नौवीं जमात में थे और लेखक पाँचवीं जमात में।

③ लेखक का मन पढ़ाई में न लगकर किन कार्यों में लगता था?

उ० - लेखक का मन पढ़ाई में नहीं लगता था क्योंकि उसकी रुचि मनोरंजन व खेलों में अधिक रहती। मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता कंकरियाँ उछालना, कागज की तितलियाँ उड़ाना, फाटक पर सवार होकर झूलना इन्हीं कार्यों में उसे अपार आनंद की प्राप्ति होती।

④ लेखक को देखते ही भाई साहब को क्रोध क्यों आ जाता?

उ० - जब लेखक खेलने के पश्चात होस्टल के कमरे में आता तो बड़े भाई साहब क्रोध में आ जाते क्योंकि उन्हें यह सहन नहीं था कि पढ़ाई - लिखाई छोड़कर वह खेलकूद में लगा रहे। वे अपने सामने सदा उसे पढ़ते रहना देखना चाहते थे।

(5) टाइम-टेबिल बना लेने पर भी उस पर अमल क्यों नहीं हो पाया?

उ.- लेखक टाइम-टेबिल तो बनाता था पर उस पर अमल नहीं कर पाता था, क्योंकि मैदान की सुखद हरियाली, हवा के हलके-हलके झोंके, फुटबाल की उछल-कूद, कबड्डी के दाँव-घात, वालीबॉल की तेजी और फुरती में लेखक अपने टाइम-टेबिल को भूल जाता था।

(6) लेखक स्वयं को किस बंधन में जकड़ा पाता था और क्यों?

उ.- लेखक फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेलकूद का तिरस्कार नहीं कर पाता, जिस प्रकार मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, उसी प्रकार लेखक भी अपने आप को खेलकूद के बंधनों से आजाद नहीं कर पाता है।

(7) शैतान का क्या हाल हुआ और क्यों?

उ. शैतान को अपने ऊपर यह अभिमान हो गया था कि वही ईश्वर का सबसे बड़ा भक्त है। इस अभिमान के कारण उसे स्वर्ग से धकेल दिया गया। उसका अंत बुरा हुआ।

(8) शाहेरूम की क्या दशा हुई और क्यों?

उ.- शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। वह भी इसके कारण अंत में भीख माँग-माँगकर मर गया। अहंकार ने उसकी दुर्दशा कर दी।

(9) लेखक की स्वच्छंदता क्यों बढ़ने लगी?

उ.- लेखक पिछले साल की तरह इस बार भी बहुत कम पढ़कर कक्षा में प्रथम स्थान आया था। इस कारण वह अनुशासनहीन हो गया था। उसने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया। सारा दिन पतंग उड़ाना शुरू कर दिया।

(10) लेखक ने भाई साहब की सहनशीलता का क्या अनुचित लाभ उठाया?

उ० - लेखक ने भाई साहब की सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाया। उसके मन में यह बात बैठ गई कि वह पढ़े या न पढ़े, पास तो हो ही जाएगा इसलिए पढ़ना-लिखना बंद कर दिया। सारा दिन पतंग उड़ाने में व्यतीत करने लगा।

(11) बड़े भाई साहब छोटे भाई साहब से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

उ० - बड़े भाई साहब समझते थे कि उन्हें छोटे भाई की निगरानी का जन्मसिद्ध अधिकार है प्राप्त है। अतः लेखक के घर में घुसते ही उसकी सुरक्षा एवं हित की दृष्टि से पहला सवाल यही पूछते थे - "कहाँ थे?" ऐसा बड़े भाई साहब इसलिए करते क्योंकि वे चाहते थे कि उनका भाई भी उनकी तरह हर दम पढ़ता रहे। बड़े होने के नाते उसे बार-बार सचेत करना वे अपना कर्तव्य समझते थे।

(12) दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उ० - दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में स्वच्छंदता का समावेश हो गया था। उसे इस बात का अभिमान हो गया था कि वह पढ़े या न पढ़े पास तो हो ही जाएगा। तकदीर उसका साथ दे ही दी और इसलिए वह बड़े भाई साहब की सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाने लग गया था। उसने सोचा कि अब उनका मुझे डाँटने का कोई अधिकार नहीं। बड़े भाई के प्रति उसका पहले जैसा आदर भाव भी नहीं रहा जो उसके रंग-ढंग, हाव-भाव से स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

(13) बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उ० बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर तो कभी, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते जिसका न कोई अर्थ होता, न कोई मतलब।

---

(14) एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

उ० - एक दिन भोर का सारा समय गुल्ली डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लेखक घर लौटा तो रौद्र रूप धारण किए बड़े भाई से उसका सामना हुआ। उन्हें देखते ही उसके पाँव तले जमीन खिसक गई। भाई साहब ने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई। इतिहास के अनेक दृष्टांत देकर लेखक को घमंड करने वालों का अंत कैसे होता है बताया और कहा कि अंधे के हाथ बटेर सदा नहीं लगा करती। अभिमान का अंत विनाश ही होता है। यह सुनकर लेखक को दाँतों पसीना आ गया और उसने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया और कमर कसकर पढ़ाई में पूरी तरह जुट गया।

---

(15) बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

उ० - बड़े भाई साहब लेखक से पाँच वर्ष ही बड़े थे परंतु भारतीय परिवारों की परंपरा के अनुसार बड़ा भाई पिता के समान होता है। परिवार के प्रति कर्तव्य का पालन करना उसका नैतिक उत्तरदायित्व होता है। उसे अपने आपको आदर्श रूप में

प्रस्तुत करना पड़ता है ताकि छोटे भाई-बहन उससे सबक लें। उसका कर्तव्य है कि वह अपने छोटे भाई को अनुशासन में रखे। दूसरों पर अनुशासन तभी रखा जा सकता है जब व्यक्ति स्वयं अनुशासन में रहे। बड़े भाई घर वालों की अपेक्षाओं पर खरा उतरना चाहते थे। वे कर्तव्यबोध के भाव से दबकर अपने छोटे भाई की रक्षा कर अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभाते थे। वे छोटे भाई को सही राह दिखाने के लिए उसके समक्ष अपना आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे जिसके कारण उनका बचपन तिरोहित (समाप्त) हो जाता है।

प्रत्येक - 3 के 5 अंक

(16) बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?

उ० - बड़े भाई साहब छोटे भाई साहब को समय परिश्रम करने की सलाह देते थे। वह कहते थे कि हमें गुल्ली-डंडा, क्रिकेट, फुटबाल तथा भाग-दौड़ में समय बरबाद करना ठीक नहीं है। उसे सफलता की घड़ी में आक्रमण नहीं करना चाहिए उसे पढ़ाई में जल्दबाजी न कर उसकी नींव को मजबूत करना चाहिए। अपने अनुभव के आधार पर वे छोटे भाई का मार्गदर्शन करते थे। छोटे भाई को प्रतिदिन कड़वे उपदेशों का सामना करना पड़ता था विभिन्न उदाहरणों एवं प्रमाणों द्वारा वे पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर व्यवहारिक ज्ञान पर बल देते थे। वे यह भी समझाते थे कि पुस्तकीय ज्ञान से लाभदायक जीवन का अनुभव होता है। वे नहीं चाहते थे कि बाप-दादा की मेहनत की कमाई पानी में न बह जाए। इनका मानना था कि बिना मेहनत के सफलता बार-बार नहीं मिलती। उनके अनुसार पढ़-लिखकर

ही बड़ा आदमी बना जा सकता है।

(17) छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया?

उ० - बड़े भाई के नरम व्यवहार के कारण लेखक की स्वच्छंदता और अधिक बढ़ गई। वह इनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। इनके प्रति उसके दिल में आदर-भाव भी कम हो गया था। वह बड़े भाई साहब की नजरें बचाकर कनकौए उड़ाता था। अब सारा समय पतंगबाजी की भेंट चढ़ने लगा। उनका सारा समय पतंगबाजी की भेंट चढ़ने लगा। उनका समय अब मांझा बांधना, कन्ने बांधना, पतंगबाजी की प्रतियोगिता की तैयारी में ही जाने लगा। लेखक को लगने लगा था कि वह पढ़े या न पढ़े, पर वह पास हो ही जाएगा इस प्रकार लेखक के मन में से बड़े भाई का डर धीरे-धीरे कम होने लगा।

(18) छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

उ० - छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा इसलिए उत्पन्न हुई क्योंकि इनके मन में अपने छोटे भाई की सफलता को देखकर इसके प्रति न ईर्ष्या थी न द्वेष। वे पूर्ववत अपने भ्रातृ धर्म का पालन कर रहे थे। वे अपनी अनेक आकांक्षाओं का बलपूर्वक दमन कर रहे थे ताकि वे अपने भाई को गुमराह होने से रोक सकें। अपने बड़े भाई के ऐसे विचारों का लेखक के हृदय पर अनुकूल प्रभाव पड़ा उसे अपनी मर्यादाओं और सीमाओं का ज्ञान हो गया कि बड़े भाई साहब केवल अधिकार जताने के लिए नहीं डांटते अपितु वास्तव में उसका भला चाहते हैं इसलिए उसके मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा

उत्पन्न हो गई।

(19) 'बड़े भाई साहब' पाठ में लेखक की शिक्षा के किन-किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया गया है? क्या आप उन के विचार से सहमत हैं?

उ०- प्रस्तुत पाठ में लेखक की शिक्षा प्रणाली के निम्न-लिखित तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया गया है-

(i) अंग्रेजी पढ़ना, लिखना या बोलना आए या न आए, लेकिन उस पर अत्यधिक बल दिया जाता है।

(ii) अपने देश के इतिहास के अतिरिक्त दूसरे देशों के इतिहास की जानकारी नर्क में करवाना।

(iii) रटंत शिक्षा प्रणाली पर बल दिया जाता है। बच्चा समझे या न समझे, लेकिन उसे विषय को रटना ही पड़ता है। इस प्रकार विषय के प्रति रुचि समाप्त हो जाती है।

(iv) अलजबरा और ज्योमेट्री ऐसे विषय हैं कि निरंतर अभ्यास करने पर भी गलत हो जाते हैं।

(v) छोटे-छोटे विषयों पर लंबे-चौड़े निबंध लिखवाना जो बच्चों की रुचि के विपरीत होती है।

अंत में इतना ही कहा जा सकता है कि ऐसी शिक्षा-प्रणाली का कोई लाभ नहीं जो बच्चों के लिए लाभदायक न होकर बोझ भी बन जाए।

(20) 'बड़े भाई साहब' कहानी से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उ०- इस कहानी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपनी स्थिति, शक्ति को समझना चाहिए। उसी के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। जो काम हम स्वयं नहीं करते, उसकी उम्मीद दूसरों से करना व्यर्थ है। यदि हम खुद योग्य नहीं हैं, सफल नहीं हैं तो हम किसी को उपदेश देने का अधिकार

खो बैठते हैं। इससे हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि परीक्षा के तनाव में सारा समय किताबों में घुसे रहने की अपेक्षा पढ़ाई सहज रूप से करें। पढ़ाई को रटने की बजाय उसे समझने की कोशिश करें। अपनी समझ को विकसित करें क्योंकि खेलकूद पढ़ाई बाधक न होकर सहायक ही होता है।